ISSN: 2349-6002

'वर्णरत्नाकर' एक अध्ययन

डॉ. देवेंद्रसिंह एल. गोहिल
असिस्टेंट प्रोफेसर, स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड आर्ट्स, पालीताणा
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-190938-459

'वर्णरत्नाकर' ज्योतिषियों ठाकुर की प्रसिद्ध रचना है | यह रचना नौ वीं सदी के प्रारंभ में मैथिली भाषा में लिखी गई रचना है | इस रचना में तत्कालीन समय के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक आदि पहलुओं की सुंदर झलक देखने को मिलती है | इतना ही नहीं तत्कालीन समय के समाज, नगर व्यवस्था, संस्कार, खानपान, परम्पराएं, धर्म एवं तंत्र आदि का वर्णन देखने को मिलता है | जिसकी सहायता से उस समय के जीवन और सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों को सुचारू रूप से समझा जा सकता है |

लेखक परिचय :-
'वर्णरत्नाकर' ज्योतिषियों ठाकुर कृत सुंदर कृति है | ज्योतिश्वर ठाकुर के समय को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं, पर अधिकतर विद्वान उनकी समयावधि को 1260 से 1350 के बीच मानते हैं | उनका जन्म मिथिला (वर्तमान बिहार के उत्तरीय भाग) में एक मैथिल ब्राह्मण के परिवार में हुआ था| उनके पिता का नाम रामेश्वर ठाकुर और दादा का नाम धीरेश्वर ठाकुर था | ज्योतिश्वर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे वे संस्कृत, प्राकृत, अवहट और मैथिली के विद्वान थे | वे साहित्यिक रूप से भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे वे कवि, नाट्यकार और संगीतकार भी थे |
ज्योतिश्वर ठाकुर राजा हरिसिंहदेव के दरबारी कवि थे | राजा हरिसिंहदेव कर्णाट वंश के राजवी थे | इसी राजदरबार में ज्योतिश्वर ठाकुर को 'कवि-शेखराचार्य' की उपाधि प्राप्त हुई थी |

प्रमुख रचनाएँ :-
ज्योतिसर ठाकुर की सबसे प्रचलित रचना 'वर्णरत्नाकर' ही है | इसे मैथिली का प्रथम तथा सबसे प्राचीन गद्य ग्रंथ माना गया है | इस ग्रंथ में समाज, संस्कृति, ऋतु, नगर और विभिन्न विषयों का विस्तृत वर्णन है | उन्होंने 'घूर्तसमागम' नाम से संस्कृत में प्रहसन (नाटक) भी लिखा इस ग्रंथ में कहीं कहीं पर मेथली का मिश्रित रूप भी देखने को मिलता है | ज्योतिश्वर ठाकुर ने 'पंचशायक' नाम से कामशास्त्र विषयक ग्रंथ भी लिखा | इस ग्रंथ की भाषा संस्कृत है | कुछ स्रोतों में 'रंगशेखर' नामक कृति का उल्लेख भी मिलता है, पर इस कृति के संदर्भ में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है |
ज्योतिश्वर ठाकुर को मैथिली साहित्य का आदिकवि व प्रथम गद्यकार माना जाता है | उनकी रचनाएं नाट्य, विश्वकोशीय तथा कामशास्त्रीय के संदर्भों में उल्लेखनीय स्थान रखती है | ज्योतिश्वर ठाकुर को मिथिला के आदि के कवि कहना गलत नहीं होगा आज भी उनकी कृतियॉ साहित्यक शोध और अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है | उनके जीवनकाल का मैथिली साहित्य पर गहरा और स्थायी प्रभाव हमें नजर आता है | उन्होंने अपनी रचनाओं की भाषा, शिल्प, विषय विस्तार और संवेदनशीलता के साथ साहित्य की परंपराओं को नया आयाम प्रदान किया है |

पांडुलिपि, संस्करण और संरक्षण :-
मूल पांडुलिपि ताड़पत्र पर तिरहुता लिपि में लिखी गई है, आकार 12.7 × 5 सेमी, जिसमें 77 पृष्ठ हैं (17 गुम)।इसे 1885-1890 के बीच नेपाल के दरबार लाइब्रेरी में पंडित हरप्रसाद शास्त्री ने खोजा।अब यह कोलकाता की एशियाटिक सोसाइटी में संरक्षित है। ग्रंथ का संपादन डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी और पंडित बाबुजी मिश्र ने किया, और 1940 में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा प्रकाशित हुआ।एक उल्लेखनीय संस्करण 1998 का है, जो साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित (ISBN 81-260-0439-8)। हाल के विश्लेषण, जैसे डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता की पुस्तक (2007), इसे सामाजिक विज्ञान की दृष्टि से जांचते हैं, लेकिन इसमें ग्रंथ सूची की कमी है।

'वर्णरत्नाकर' का विस्तृत परिचय :-
यह ग्रंथ मुख्य रूप से सात "कल्लोलों" (तरंगों या अध्यायों) में विभाजित है, जो विभिन्न विषयों पर केंद्रित हैं। प्रत्येक कल्लोल मध्यकालीन जीवन के विभिन्न पहलुओं का जीवंत चित्रण करता है, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक तत्व शामिल हैं। कुछ स्रोतों में इसे आठ कल्लोलों में वर्णित किया गया है, लेकिन मानक रूप से सात ही माने जाते हैं, जिसमें उप-विषयों को शामिल किया जा सकता है। अब हम प्रत्येक कल्लोल का विस्तृत विवरण देखेंगे :-

प्रथम कल्लोल : नगर वर्णन
इस कल्लोल में ज्योतिश्वर ठाकुर ने मध्यकालीन शहरों और नगरीय जीवन का विस्तृत चित्रण किया है। इसमें शहरों की संरचना, बाजारों, मंदिरों, घरों, सड़कों, नदियों और तीर्थ स्थलों का वर्णन है।लेखक ने दैनिक जीवन, व्यापार, त्योहारों और सामाजिक गतिविधियों को जीवंत रूप से उकेरा है, जो 14वीं शताब्दी के मिथिला क्षेत्र के शहरी अर्थव्यवस्था और संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है। उदाहरण के लिए, इसमें 66 तीर्थ स्थलों का उल्लेख है, जो धार्मिक महत्व और यात्राओं से जुड़े हैं।यह अध्याय जाति वर्णन और लोक वर्णन से शुरू होता है, जिसमें विभिन्न वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि) और लोक जीवन की झलकियां शामिल हैं।कुल मिलाकर, यह कल्लोल मध्यकालीन भारत के शहरी परिदृश्य का एक विश्वकोशीय चित्र प्रस्तुत करता है, जिसमें वास्तुकला, व्यापारिक गतिविधियां और सामाजिक संरचना पर जोर दिया गया है।

द्वितीय कल्लोल : नायिका वर्णन या नायक-नायिका वर्णन
यह कल्लोल स्त्रियों (नायिकाओं) और पुरुषों (नायकों) के विभिन्न प्रकारों, उनके सौंदर्य, वेशभूषा, आभूषणों और भावनाओं का विस्तृत वर्णन करता है। इसमें नायिकाओं को पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी आदि श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जो कामशास्त्र की परंपरा से प्रेरित है। लेखक ने स्त्री-पुरुष संबंधों, प्रेम भावनाओं और सामाजिक मानदंडों का चित्रण किया है, जिसमें वस्त्र, रत्न और शारीरिक विशेषताओं का बारीकी से उल्लेख है। यह अध्याय मध्यकालीन समाज में स्त्री जीवन की झलक देता है और UPSC जैसे परीक्षाओं में विशेष रूप से अध्ययन किया जाता है। इसमें भावनात्मक और शारीरिक वर्णन के माध्यम से श्रृंगार रस की प्रधानता है, जो बाद के मैथिली साहित्य को प्रभावित करता है।

तृतीय कल्लोल : अस्थाना वर्णन या स्थान वर्णन
इस कल्लोल में राजदरबार और राजकीय जीवन का विवरण है, जिसमें राजा, रानी, मंत्री, दरबारी और राज-कर्मचारियों का चित्रण शामिल है। इसमें प्रभात से रात्रि तक की दैनिक दिनचर्या, संगीत, नृत्य, सभाएं और षोडश महादान (सोलह प्रकार के दान) का वर्णन है। लेखक ने राजा हरिसिंहदेव के दरबार की भव्यता, प्रोटोकॉल और शिकार, पशुपालन जैसी गतिविधियों को उकेरा है, जो मिथिला की राजकीय संस्कृति को दर्शाता है। यह अध्याय राजनीतिक और सामाजिक संरचना पर प्रकाश डालता है, जिसमें हिंदू दरबार की यथार्थ छवि प्रस्तुत की गई है।

चतुर्थ कल्लोल : ऋतु वर्णन
यह कल्लोल छह ऋतुओं (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर) का काव्यात्मक वर्णन करता है। इसमें प्रत्येक ऋतु के प्रभाव पर प्रकृति, जीव-जंतु, संगीत (राग-रागिनियां) और मानव जीवन का चित्रण है। लेखक ने मौसमी परिवर्तनों से जुड़ी भावनाओं, फसलों, त्योहारों और दैनिक गतिविधियों को विस्तार से वर्णित किया है, जो पर्यावरणीय और सांस्कृतिक इतिहास को उजागर करता है। यह अध्याय प्रकृति के साथ मानव जीवन की एकता को दर्शाता है और मध्यकालीन उत्तर भारत की जलवायु संबंधी जानकारी प्रदान करता है।

पंचम कल्लोल : प्रयाण वर्णन
इस कल्लोल में यात्राओं, घोड़ों, रथों, सेनाओं, नौकाओं और यात्रा-संबंधी दृश्यों का वर्णन है। इसमें युद्ध यात्राएं, व्यापारिक यात्राएं और तुर्क आक्रमणों जैसे राजनीतिक संदर्भ शामिल हैं, जो उस समय की अस्थिरता को प्रतिबिंबित करते हैं। लेखक ने यात्रा के दौरान के दृश्यों, सैन्य और भौगोलिक विवरणों को बारीकी से उकेरा है। यह अध्याय मिथिला की भौगोलिक और सैन्य संस्कृति पर प्रकाश डालता है।

षष्ठ कल्लोल : भट्टादी वर्णन

यह कल्लोल योद्धाओं, सैनिकों, वीरों और राजवंशों (जैसे पुष्पभूति, तोमर) का वर्णन करता है। इसमें 84 सिद्धाचार्यों की अपूर्ण सूची (76 नाम) और 64 योगिनियों का उल्लेख है, जो बौद्ध, तांत्रिक और नाथ परंपराओं से जुड़ी हैं। लेखक ने वर्ण व्यवस्था से जाति-उपजाति के संक्रमण को दर्शाया है, जिसमें वीरता और आध्यात्मिक तत्व शामिल हैं। यह अध्याय धार्मिक विविधता और योद्धा संस्कृति का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

सप्तम कल्लोल : श्मशान वर्णन

अंतिम कल्लोल में श्मशान घाट, मृत्यु, अंतिम संस्कार और जीवन की नश्वरता पर दार्शनिक चिंतन है। इसमें वैदिक अनुष्ठान, न्याय दर्शन और मृत्यु से जुड़े दृश्यों का वर्णन है, जो जीवन-मृत्यु के चक्र को उजागर करता है। लेखक ने यहां अस्तित्ववादीय विचारों को छुआ है, जो ग्रंथ को दार्शनिक गहराई प्रदान करता है। यह अध्याय ग्रंथ का समापन करता है, जिसमें जीवन की क्षणभंगुरता पर जोर दिया गया है।

कुछ विश्लेषणों में आठवें कल्लोल के रूप में अतिरिक्त उप-विषयों (जैसे रत्न, वस्त्र) को शामिल किया जाता है, लेकिन मूल रूप से सात ही हैं।

निष्कर्ष

'वर्णरत्नाकर' ज्योतिष्वर ठाकुर की महान साहित्यिक उपलब्धि है, जो मैथिली गद्य का आदिकाव्य है और भारतीय साहित्य में गहराई, विविधता एवं ऐतिहासिक महत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है। कुल मिलाकर, "वर्णरत्नाकर" न केवल मैथिली साहित्य का आधार है, बल्कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास और संस्कृति का एक अमूल्य दस्तावेज है, जो उस युग की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

[1] 1चटर्जी, स. क. एवं मिश्र, बा. (संपा.) (1940). वर्णरत्नाकर. रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कोलकाता.

[2] 2ज्योतिश्वर ठाकुर. (13वीं-14वीं शताब्दी). वर्णरत्नाकर (मूल पांडुलिपि: ताड़पत्र, तिरहुता लिपि, 12.7×5 सेमी, 77 पृष्ठ; 17 गुम). एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता (1885-1890 में पं. हरप्रसाद शास्त्री द्वारा खोज).

[3] ज्योतिश्वर ठाकुर. (1998). वर्णरत्नाकर. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली. ISBN: 81-260-0439-8.

[4] गुरुमैता, भू. प्रा. (2007). वर्णरत्नाकर पर सामाजिक विज्ञान दृष्टि (शीर्षक अनुमानित). (विश्लेषण पुस्तक).

[5] शास्त्री, ह. प्रा. (1885-1890). नेपाल दरबार लाइब्रेरी से पांडुलिपि खोज (संदर्भित).